International Journal of Applied Research 2015; 1(5): 87-88

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 3.4
IJAR 2015; 1(5): 87-88
www.allresearchjournal.com
Received: 01-04-2015
Accepted: 16-04-2015

चन्द्रशेखर
पीएच.डी. छात्र बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

Correspondence:
चन्द्रशेखर
पीएच.डी. छात्र बौद्ध अध्ययन विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

राजनीति में नारी की भूमिका

चन्द्रशेखर

राजनीति में नारी की भूमिका का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि किसी भी विशिष्ट राजनीतिक संरचना में उसे कितनी स्वतंत्रता प्राप्त है। वैदिक काल में ही नारियाँ विभिन्न प्रकार के बन्धनों से मुक्त थीं। समाज में मान्यताओं और जटिलताओं का अभाव था, जिन्होंने कालान्तर में लैंगिक असमानता उत्पन्न की। वंश की शुद्धता और व्यवसाय पर आधारित जाति प्रथा जिसके फलस्वरूप कठोर नियमों का निर्माण तथा भूमिकाओं के वर्गीकरण में नारियों की सक्रियताओं को सीमित किया। कुछ समय तक यह व्यवस्था लचीली थी, लेकिन बाद में ये भी सक्रिय होती गयीं। वैदिक युग में मैत्रेयी, गार्गी, अपाला, घोषा आदि विदुषी महिलायें थीं। उनका समाज में सम्मान भी था। वे सब किसी वार्तालाप में हिस्सा ले सकती थीं, राजनीति से सम्बन्धित मुद्दों पर अपना विचार व्यक्त कर सकती थीं। गुप्त काल के समय स्त्रियों की स्थिति पूर्व–काल के समान ही रही। यह विचार प्रचलित हो चला था कि लड़की का विवाह उसके मासिक धर्म के प्रारम्भ होने से पहले कर देना चाहिए। इसके बावजूद भी स्त्रियाँ धार्मिक एवं राजनीतिक उत्सवों अथवा कार्यों में भाग लेती थीं। साधारणतया एक पत्नी प्रथा प्रचलित थी, केवल शासक और धनवान वर्गों में ही बहुपत्नी प्रथा के प्रमाण प्राप्त होते हैं। पत्नी को परिवार में सम्मानित स्थान प्राप्त था। विधवा विवाह पर कोई प्रतिबन्ध नहीं था। सती–प्रथा कहीं–कहीं पर प्रारम्भ हो चुकी थी। अमर कोष में स्त्री–शिक्षक और वेद पाठियों का वर्णन किया गया है। याज्ञवल्क्य स्मृति में पत्नी को भी पति की सम्पत्ति का अधिकारी बताया गया है। गुप्त काल में नारी एक आदर्श पत्नी, शिक्षक, विदुषी के रूप में हो सकती थी। इससे पता चलता है कि वह राजनीति भी करती रही होगी।

गुप्तकाल के उपरान्त हम पुष्यभूति वंश पर अपना ध्यान करें तो हमें पता चलता है कि इस वंश का शासक हर्षवर्धन कन्नौज पर शासन करता है। जिसका समय 606–647 ई. है। कन्नौज में राज्यश्री शासिका थी, क्योंकि वह विधवा थी। उसकी सहायता हेतु हर्ष थानेश्वर से अपनी राजधानी परिवर्तित करके ही कन्नौज लाया था कि बहन के साथ राज्य के कार्यों में हाथ बँटाता रहूँगा। इस प्रकार हम देखते हैं कि सातवीं सदी में भी नारियां राजनीति में अहम भूमिका निभाती थीं। इसके उपरान्त जो वंश आये उसमें भी नारियों ने बढ़–चढ़कर राजनीतिक कार्यों में भाग लिया। यहाँ पर हम देखते हैं कि समाज बदल रहा था अर्थात् नये युग में प्रवेश कर रहा था। उसके बावजूद नारियों को पर्दा प्रथा तथा सती प्रथा का शिकार होना पड़ा। यह समय थोड़ा सा उथल–पुथल का हो जाता है, नहीं तो वैदिक काल से लेकर यहाँ तक नारियों ने राजनीति में कुछ न कुछ भूमिका अदा करने का भरसक प्रयास किया है और कुछ ने अच्छी भूमिका भी निभायी है। इसी प्रकार की भूमिकाओं को देखते हुए अन्य नारियों ने अपने अधिकारों तथा समाज में अपना वर्चस्व बनाने के लिए तत्पर रही हैं।

जब हम मुगलकाल का अवलोकन करते हें तो देखते हैं कि राजनीति में नारियों की भूमिका राजाओं के साथ सराहनीय थी। उदाहरणस्वरूप अकबर (जलालुद्दीन) राजनैतिक सलाह में अपनी खास बेगमों को शामिल करता था, जैसे जोधा, सलीमा और रुकइया बेगम आदि। कभी–कभी जलाल (अकबर) स्वयं सलीमा के पास जाकर उनसे आग्रह करता था कि हमें नेक सलाह दें तो अच्छा होगा। इसके साथ–साथ वह अपनी बड़ी अम्मी महामंगा से भी मशविरे करता था जो कि राजनीतिक मामले की शातिर थी। जहाँगीर के शासन काल में उसकी पत्नी नूरजहाँ ने राजनीति में बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया था। इल्तुतमिश की बेटी रजिया सुल्तान खुद शासिका बन बैठी थी और लाल वस्त्र पहनकर ही न्याय करती थी।

आज के इस आधुनिक युग में राजनीति के अन्दर नारियों की भूमिका प्रशंसनीय है। ग्रामीण क्षेत्र से लेकर शहरी क्षेत्र तक इन लोगों ने जनता की सेवा तथा विभिन्न प्रकार के उद्देश्यों हेतु राजनीति को अपना औजार बनाया है। (हम इस बात को भी स्वीकार करते हुए आगे बढ़ रहे हैं कि उनकी भूमिका अभी छोटे पैमाने पर ही है।) देश के प्रत्येक राज्य में यह विचारधारा फैल रही है कि हमें भी राजनीति में भाग लेना चाहिए। ग्राम स्तर पर ग्राम प्रधान के चुनाव के लिए वे तैयार रहती हैं और कुछ जगहों पर (ग्राम सभाओं में) वे अपनी प्रधानियत चला रही हैं। यही छोटे स्तर पर नारी राजनीति ही

देश की बड़ी राजनीति के लिए चिनगारी के समान है। जब एक नारी घर के दहलीज को पार करके आगे कदम बढ़ाती है तो ढेर सारी नारियों के मन में यह उत्सुकता उत्पन्न होती है कि काश! मैं भी...।

वैसे तो हमारा देश पुरुष–प्रधान रहा है, अधिकतर नारियाँ घर की चौखट तक ही सीमित हैं। कहीं–कहीं पर नारियों को मोहरा बनाकर राजनीति भी की जा रही है। पुरुष वर्ग उनके नाम पर ही राजनीति के सारे कर्तव्यों का निर्वाह कर रहा है। यहाँ पर हम देखते हैं कि वे घर की राजनीति तक सीमित रह जाती हैं, फिर भी राजनीति के माध्यम से आज वे भारत के राष्ट्रपति पद तक पहुँचने में सफल रही है, वे हैं श्रीमती प्रतिभा देवी सिंह पाटिल। संसद भवन में स्त्रियों के लिए आरक्षण की व्यवस्था है। यह अधिकतर देश में नारियों को राजनीति के प्रति उकसाने व पुरुष के बराबर रहकर कार्य करने का एक उचित माध्यम है। धन्यवाद देते हैं उन लोगों को जिनके चेतना में यह बात उपजी। भारत के कई राज्यों में नारियों ने राजनीति के माध्यम से उच्च पदों पर कार्य किया है तथा इस समय सक्रिय रूप से कार्य कर रही हैं। जैसे– सोनिया गाँधी (कांग्रेस), मायावती (ब.स.पा.) उत्तर प्रदेश की मुख्यमंत्री थीं, सुषमा स्वराज (विदेश मंत्री) (बीजेपी), शीला दीक्षित (काँग्रेस), जयललिता, डिम्पल यादव इत्यादि। कुछ समय पूर्व संसद भवन की कार्यवाही मीरा कुमार सुचारू रूप से चला रही थीं और वर्तमान समय में सुमित्रामहाजन जी।

इस समय हम देश की राजधानी दिल्ली की तात्कालिक राजनीतिक परिस्थिति को केन्द्रित करें तो हमें देखने को मिलेगा कि नारियों ने बढ़–चढ़कर भाग लिया। उनकी इस सहभागिता को देखते हुए अन्य नारियों में सहभागी होने का विचार आया है। उनका मानना है कि हम भी राजनीति में कुछ कर सकते हैं अर्थात् सही ढंग से न चल रही विभिन्न प्रकार की व्यवस्थाओं को सही तरीके से चलाना तथा नियमों को जिस प्रकार से लागू किया जाता है उसी प्रकार से अमल करवाना, क्योंकि सही तरह से अमल न करवाना ही भ्रष्टाचार की जड़ है।

उपर्युक्त सारी बातों का श्रेय उन संस्थाओं, अभिभावकों, नीति बनाने वालों आदि को जाता है, जो अहम भूमिका नारी राजनीति के लिए निभाये। संविधान ने अवसर दिया, नियम बनाया, लेकिन घर की दहलीज को घर के अभिभावकों ने ही पार कराया है। यहाँ पर अभिभावक वर्ग का महत्व इसलिए है कि एक नारी का घर से बाहर राजनीति का रास्ता बहुत ही मुश्किल होता है, उसमें पति, भाई, पिता आदि का विशेष रूप से सहयोग होता है। इसी सहयोग से ही आज वे इतनी खुश हैं तथा राजनीति का हिस्सा हैं।

संदर्भ ग्रन्थ

1. भारतीय स्त्री – प्रतिभा जैन एवं संगीता शर्मा
2. प्राचीन भारत का इतिहास – के.सी. श्रीवास्तव
3. मध्यकालीन भारत का इतिहास – हरिश्चन्द्र वर्मा
4. भारतीय संविधान – डी.डी. बसु
5. हर्ष चरित बाणभट्ट
6. प्राचीन भारत का इतिहास – श्री राम गोयल
7. प्राचीन भारत – आर.एस. द्विवेदी
8. हर्षचरित : एक सांस्कृतिक अध्ययन – बी.एस. अग्रवाल
9. एजुकेशन इन एन्श्येण्ट इण्डिया – ए.एस. अल्तेकर